ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-9* December- 2018
Anthology : The Research

# छत्तीसगढ़ की जनजातियॉ (जिला बालोद के विशेष संदर्भ में)

**अनुग्रहती जॉन**
सहायक प्राध्यापक,
समाज शास्त्र विभाग,
शा. एन.सी.जे. महाविद्यालय,
दल्ली राजहरा, बालोद, (छ.ग.)

**सारांश**

अफ्रीका के पश्चात् जनजाति जनसंख्या के आधार पर भारत का दूसरा स्थान है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जनजातीय जनसंख्या लगभग 10.43 करोड़ थी, जो कि सम्पूर्ण जनसंख्या का 9 प्रतिशत है। भारत की जनजातीय जनसंख्या फ्रांस एवं ब्रिटेन की कुल जनसंख्या से अधिक है तथा आस्ट्रेलिया की जनसंख्या से चार गुना अधिक है।

**मुख्य शब्द :** छत्तीसगढ़ राज्य, अनुसूचित जनजाति।

**प्रस्तावना**

नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की कुल जनसंख्या 2 करोड़, 55 लाख, 40 हजार 196 है जिसमें अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 66,16,596 है जो कुल जनसंख्या का 31.76 प्रतिशत है।[1] अनुसूचित जनजाति संविधान आदेश 1950, में संशोधन कर अनुसूची में भाग–19 के पश्चात् "भाग 20 छत्तीसगढ़" जोड़ा गया है। इस राज्य में 42 जनजातियों को सूची में शामिल किया गया है।[2] जनसंख्या की दृष्टि से राज्य में गोंड़ सबसे बड़ा आदिवासी समूह है राज्य में अनुसूचित जनजातियोंको तीन भागों में विभाजित किया गया है –

**उत्तरी पूर्वी क्षेत्र**

कोरिया, सरगुजा, जशपुर, रायगढ़ कोरबा, बिलासपुर, जांजगीर, चांपा, सुरजपूर, एवं बलरामपुर। इस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताएं स्थान–स्थान पर बदल जाती हैं। सरगुजा क्षेत्र का अधिकांश भाग व जशपुर जिला पहाड़ी क्षेत्र है। इस क्षेत्र में उरांव, कोरवा, कोल, कमार, पनिका, जनजाति निवासरत् हैं। सरगुजा, जशपुर और कोरबा जिले की पहाड़ी क्षेत्र में कोरवा जनजाति निवास करती है, जो "आदिम" श्रेणी में आती हैं।[3] समतल क्षेत्रों में उरांव और कमार जनजाति निवास करती है। यह जनजाति मुख्यतः कृषि पर निर्भर है।

**मध्यवर्ती क्षेत्र**

इस क्षेत्र में रायपुर, महासमुन्द, धमतरी, दुर्ग, राजनांदगांव, कवर्धा, मुंगेली, बेमेतरा, बालोद, बलौदाबाजार, एवं गरियाबंद जिले आते हैं। बिलासपुर, मुंगेली, कवर्धा में बैगा जनजाति निवास करती है, जो कि गोदनाप्रिय जनजाति है, बिंझवार, हल्बा, भुंजिया और कंवर जनजातियां भी निवास करती हैं।

**दक्षिणी क्षेत्र**

बस्तर, दन्तेवाड़ा, कोण्डागांव, बीजापुर, नारायणपुर एवं सुकमा, जिला आते हैं। इस क्षेत्र में मारिया, मुरिया, भतरा, धुरवा, गदबा, कोया, परजा, पारधी, जनजातियां निवास करती हैं। राज्य में निवासरत् 5 जनजातियों (कमार, अबूझमाड़िया, पहाड़ी कोरवा, बिरहोर और बैगा) कोविशेष पिछडी जनजाति के रूप में भारत शासन द्वारा मान्य किया गया है।[4]

2011 की जनगणना के अनुसार बालोद जिला की कुल जनसंख्या 826165 है जिसमें जनजातियों की संख्या 259043 है। जिसमें पुरूषों की संख्या 126448 एवं महिलाओं की संख्या 132595 है।[5]

छ.ग. राज्य का महत्वपूर्ण जिला– बालोद की अपनी महत्वपूर्ण विषेशता है। यह जिला जनजाति बहुल जिला है। राज्य की एकमात्र जिला है जिसमें हल्बा जनजातियों की जनसंख्या सर्वाधिक है। विकास खण्ड डौण्डी उप–तहसील दल्ली राजहरा की पहाड़ियों से भिलाई इस्पात संयंत्र को कच्चे माल की आपूर्ति

की जाती है। राज्य के आर्थिक विकास में जिले का विशेष योगदान है। दल्ली राजहरा में खदान होने के फलस्वरूप यहॉ की संस्कृति में विविधता देखने को मिलती है। यही कारण है कि जिले में निवासरत् जनजातियों की संस्कृति कुछ परम्परागत एवं कुछ आधुनिक दोनों का अद्भुत सम्मिश्रण देखने को मिलता है। जिले में मुख्यतः हल्बा, गोंड़, उरॉव, पठारी, कंडरा, कमार, बैगा जनजाति निवास करती हैं। सभी जनजातियों की संस्कृति में विविधता है। यह तो सर्वविदित है, राज्य के जनजाति बहुल जिलों की जनसंख्या एवं विकास खण्ड की जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या की अपेक्षा स्त्रियों की जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

**जिलेवार अनुसूचित जनजाति जनसंख्या (2011)[6] के अनुसार**

| क्र. | जिला | अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या | पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|---|
| 1. | बस्तर | 9,31,780 | 4,56,841 | 4,74,939 |
| 2. | जषपुर | 5,30,378 | 2,62,731 | 2,67,647 |
| 3. | रायगढ़ | 5,05,378 | 2,50,473 | 2,55,136 |
| 4. | बिलासपुर | 4,98,469 | 2,48,172 | 2,50,197 |
| 5. | कोरबा | 4,93,559 | 2,46,323 | 2,47,297 |
| 6. | रायपुर | 4,76,446 | 2,35,271 | 2,41,175 |
| 7. | कांकेर | 4,14,770 | 2,03,934 | 2,10,836 |
| 8. | दन्तेवाड़ा | 4,10,255 | 1,99,731 | 2,10,524 |
| 9. | राजनांदगांव | 4,05,194 | 1,98,032 | 2,07,162 |
| 10. | दुर्ग | 3,97,416 | 1,96,008 | 2,01,408 |
| 11. | महासमुन्द | 2,79,896 | 1,37,339 | 1,42,557 |
| 12. | धमतरी | 2,07,633 | 1,02,058 | 1,05,575 |
| 13. | बीजापुर | 2,04,189 | 1,01,519 | 1,02,670 |
| 14. | जांजगीर चांपा | 1,87,196 | 93,186 | 94,010 |
| 15. | कवर्धा | 1,67,043 | 82,597 | 84,446 |
| 16. | नारायणपुर | 1,08,161 | 53,518 | 54,643 |

उपयुक्त सारिणी से स्पष्ट है कि राज्य के 16 जिलों में जनजातियों की संख्या में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक पायी गयी। इसी तरह जिला बालोद के पॉच विकास खण्ड में जनजाति जनसंख्या निम्नानुसार है।[7] :–

| क्र. | विकास खण्ड/तहसील | योग | पुरूष | स्त्री |
|---|---|---|---|---|
| 1. | बालोद | 32740 | 15896 | 16844 |
| 2. | गुण्डरदेही | 25989 | 12749 | 13240 |
| 3. | डौण्डीलोहारा | 92224 | 45114 | 47110 |
| 4. | डौण्डी | 80264 | 39117 | 41147 |
| 5. | गुरूर | 27826 | 13571 | 14254 |

लिंगानुपात (प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियॉ) जिला बालोद में 1022, बालोद में 1021, गुण्डरदेही में 1010, डौण्डीलोहारा में 1033, डौण्डी में 1033, और गुरूर में 1012 पायी गयी।

विकासखण्ड डौण्डीलोहारा के 211 सभी ग्रामों में, गुरूर विकास खण्ड के 122, डौण्डी विकास खण्ड के 118, सभी ग्रामों में जनजातियॉ निवास करती हैं, साथ ही विकास खण्ड डौण्डी के 111 ग्रामों में पुरूषों की संख्या महिलाओं से कम पायी गयी। विदित हो कि जिले की जनजातियॉ पुत्र–पुत्री दोनों का पालन–पोषण समान ढ़ंग से करती हैं। भ्रूण हत्या जैसी बातें इनमें नहीं पायी जाती हैं। श्रम विभाजन लिंग और आयु के आधार पर होता है। सभी कार्य देखकर सीखने की प्रवृत्ति इनमें पायी जाती है, कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों के प्रति इनमें रूचि देखी गयी। त्वरित यातायात के साधन व संचार के साधन उपलब्ध होने के कारण नये व्यवसाय से परिचित हो रहे हैं। पूर्व में ऋतुओं के अनुसार जनजातियों का व्यवसाय बदलता था। वर्तमान में कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी करने लगे हैं। अब कृषि भरण–पोषण तक सीमित नहीं रह गया है, मुद्रा का महत्व बढ़ा है, अब धन का संचय भी करने लगे हैं। अब जनजातियों के खान–पान, रहन–सहन, विचार मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हो रहे हैं। जैसे कि टोटम संबंधी धारणाएं विश्व के सभी जनजातियों में पायी जाती हैं।[8] बालोद जिले की जनजातियॉ भी टोटम संबंधी नियमों का पालन करती जा रही हैं। परन्तु शिक्षा, औद्यौगिकीकरण, नगरीकरण के प्रभाव से अपने टोटम को भूल रहे हैं विशेषकर हल्बा, गोंड़ जनजाति के सदस्यों से उनके टोटम के बारे में जानकारी लेने पर नहीं मालूम जैसे जवाब प्राप्त होते है और हल्बा जनजाति का गोत्र पूर्व में पिद्दा था जिनका टोटम सूअर का बच्चा है परन्तु उन्होंने इसे बदलकर पिस्दा कर दिया जिसका कोई अर्थ ही नहीं है।[9]

जिले के उरॉव जनजाति में शिक्षा का सबसे अधिक प्रतिशत होने एवं ईसाई मिशनरियों के प्रभाव में अधिक होने के बावजूद अपने टोटम के संबंध में जानकारी रखते हैं।[10] यद्यपि टोटम संबंधी नियमों का पालन अब कड़ाई से नहीं किया जाता है, इसके बावजूद एक ही टोटम के लोग आपस में रक्त संबंधी माने जाते हैं, यही कारण है कि उनके बीच विवाह नहीं किया जाता है। उरांव जनजातियों का टोटम पशु, पक्षी, वृक्ष, लता और भौतिक पदार्थ भी हैं।[11]

जिले की उरॉव जनजातियों के टोटम एवं अर्थ निम्नानुसार हैः–

| क्र. | टोटम | टोटम/गोत्र | अर्थ |
|---|---|---|---|
| 1. | वस्तुएं | पन्ना<br>बेक,<br>खेस,<br>बखला | लोहा,<br>नमक (निमक),<br>धान,<br>पेड़ का छाल |
| 2. | वृक्ष | बडा<br>कुजुर | बट वृक्ष (बरगद),<br>लता |
| 3. | पशु | लकड़ा<br>तिग्गा,<br>किस्सपोट्टा | शेर,<br>बन्दर,<br>सूअर, की अंतड़ी |
| 4. | रेंगने वाले जीव एवं मछली | तिर्की,<br>एक्का,<br>किण्डो,<br>मिंज,<br>खलखो | छोटा चूहा<br>कछुवा,<br>मछली,<br>मछली,<br>विशेष प्रकार की मछली |
| 5. | पक्षी | केरकट्टा<br>टोप्पो<br>खाखा | चिड़िया,<br>पक्षी,<br>पक्षी |

**निष्कर्ष**

केरल राज्य जो कि भारत का पूर्ण साक्षर राज्य है और प्रत्येक 1000 पुरूषों में 1084 महिलाएं हैं। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले की जनजाति जिनमें शिक्षा का बहुत कम प्रतिशत पाया जाता है उसके बावजूद पुरूषों की संख्या से महिलाओं की संख्या अधिक पायी गयी। रोचक तथ्य यह है कि जनजातियों की मनमोहक संस्कृति ही हमें अपनी ओर अध्ययन हेतु आकर्षित नहीं करती अपितु उनकी जनसंख्यात्मक बनावट भी हमें अध्ययन के लिये प्रेरित करती हैं। 21वीं सदी की दस्तक से जनजाति भी अछूती नहीं रही। इनके जीवन के हरेक पहलू में परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। शिक्षा के प्रतिजागरूक हो रहे हैं। परम्परागत विचार–धाराओं में बदलाव आया है, अपनी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, व्यक्तिगत स्थिति को उॅचा उठाने में कटिबद्ध हैं। फलस्वरूप ग्रामों में आज आधुनिक टेक्नोलॉजी की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। उत्तर आधुनिकता युग की सबसे सशक्त संचार का साधन मोबाइल आज गांव के प्रत्येक घरों में नहीं बल्कि घर के प्रत्येक व्यक्ति के पास पाये जाने लगे हैं। भोजन बनाने के लिये गैस चूल्हा का प्रयोग करने लगे हैं। भोजन बनाने के बर्तनों में कांसा, स्टील और जर्मन बर्तन का प्रयोग करने लगे हैं, घरों में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों में बदलाव आया है। पूर्व में धान कूटने के लिये मोटा लकड़ी का यंत्र प्रत्येक घरों में पाया जाता था, वर्तमान में एक भी परिवार में उपलब्ध नहीं है। जनजातियॉ अपनी बोली के अतिरिक्त स्थानीय बोली और हिन्दी अंग्रेजी का भी प्रयोग करने लगे हैं। तीज, त्यौहार और विवाह समारोह में उपयोग किये जाने वाली सामग्रियॉ अब बाजार से खरीदने लगे हैं। वर–वधु के वस्त्र–आभूषणों एवं दहेज में दिये जाने वाले सामग्रियों में भी परिवर्तन हुआ है। शिक्षा के प्रति जागरूक हुए हैं, बीमार पड़ने पर बैगा–गुनिया के साथ–साथ अब डॉक्टर के पास जाने लगे हैं, परन्तु जिले की जनजातियों में बलि प्रथा आज भी पायी जाती हैं।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. *सिंह सत्य प्रकाश : शिक्षा दूत छत्तीसगढ़ एक परिचय –शिक्षा दूत ग्रंथागार प्रकाशन 95, समता कॉलोनी, रायपुर पृ. 86 (2013)*
2. *सुरज ललित : "संदर्भ छत्तीसगढ़" देशबन्धु प्रकाशन विभाग देशबन्धु परिसर रायपुर, पृ. 49 (2002)*
3. *चौधरी नीरज कुमार संजीव : "छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान" लुसेन्ट पब्लिकेशन न्यू बाइपास रोड़, आशेचक पटना पृ. 158 (2014)*
4. *सिंह सत्य प्रकाश : पृ. 79 (2013)*
5. *जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2013–14, जिला योजना एवं यांख्यिकी कार्यालजय बालोद (छ.ग.) पृ. 12.*
6. *चौधरी नीरज, कुमार संजीव – पृ. 158 (2014)*
7. *जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2013–14 पृ.12*
8. *Dur Kheim E, "The Elementary Forms of Religious life" The Free press newyork 1915, i`-27.*

9. जॉन अनुग्रहतीः "जनजातीय समाज पर औद्यौगिकीकरणका प्रभाव" पी.एच.डी. थीसिस पं. रविशंकर शुक्ल वि. विद्यालय रायपुर 2015 पृश्ट–155
10. बघेल चक्रवर्ती : " जशपुर जिले की आदिवासियों में गोत्र चिन्ह, सरना पूजा तथा जैव एवं पर्यावरण संरक्षण" रिसर्च जोन वाल्यूम 9, नं.3 जून 2001 पृ.1. 143.
11. Das. A.K. and Raha M.L. : The Oraons of Sunderban Calcutta Cultural Research Institute, Government of West Bengal 1965.

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. Vidyarthi L.P. Rai Biny: "The Tribal Culture of India Concept Publishing Company, New Delhi, 1985.
2. तिवारी विजय कुमार : भारत की जनजातियॉ– हिमालया पब्लिशिंग हाऊस मुम्बई 1998
3. शर्मा ब्रम्हदेव : आदिवासी विकास खण्ड सैद्धांतिक विवेचना– म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 1986
4. मजूमदास एवं मदान : सामाजिक मानव शासत्र परिचय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली 1978.
5. दुबे एस.सी.: "मानव और संस्कृति" राजकमल प्रकाशन देहली, 1969.
6. विद्यार्थी ललित प्रसाद : "बिहार के आदिवासी सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन" ओरिएंट पब्लिकेशन्स, दिल्ली 1986
7. एलविन बेरियर : जनजातीय मिथक (मुडिया आदिवासियों की कहानियॉ, अनुवाद निरंजन महावर, राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली, 2008.